[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 785 **B**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

आदिकालीन साहित्य के सिद्ध और नाथ साहित्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए ।

3. राम भक्ति काव्य की प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

4. रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए । (15)

अथवा

रीतिकालीन सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए – (5 + 5 + 5)

(i) संत काव्य धारा

(ii) रीतिकालीन वीर काव्य

(iii) कृष्ण भक्ति साहित्य

(iv) रासो साहित्य

(v) सूरदास

1

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3135 **A**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. हिन्दी साहित्य की इतिहास लेखन की परंपरा पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

रासो काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

3. संत काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए उनका मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य की सामान्य विशेषताएँ लिखिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :- (5 + 5 + 5)

(i) सिद्ध साहित्य

(ii) रीतिकालीन नीतिकाव्य

(iii) रामभक्ति काव्य

(iv) आदिकालीन सामाजिक परिवेश

(v) अमीर खुसरो

(100)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3294 A

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra (भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य हेतु से क्या तात्पर्य है ? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर विचार कीजिए। (12)

P.T.O.

2. रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

शब्द शक्ति किसे कहते हैं ? लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए । (12)

3. महाकाव्य अथवा खंडकाव्य का तात्विक विवेचन कीजिए ।

4. (क) किन्हीं तीन अलंकारों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

अनुप्रास, विभावना, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं तीन छंदों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीड़ित, चौपाई, रोला, दोहा, छप्पय

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) करुण रस

(ग) रूपक और उपमा में अंतर

(घ) मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण

(ङ) काव्य दोष के पाँच प्रकार

ıis question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No...............

No. of Question Paper : 3461 A

ique Paper Code : 12051402

me of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

me of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

nester : IV

ı : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

ों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) अगर मैं तुमको

ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की,

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ--

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?
चाहिए किसको नहीं सहयोग?
चाहिए किसको नहीं सहवास?
कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?
हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण
जिसको डाल दे कोई कहीं भी
करेगा वह कभी कुछ न विरोध। (मूल–संवेदना)

(ख) जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है
तो उठा लेती है सुई और तागा
मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं
तो सुई चलाने वाले उसके हाथ
देर रात तक
समय को धीरे-धीरे सिलते हैं
जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो
(काव्य–सौंदर्य)

(ग) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत-भाग्य-विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है।

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चवंर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय-जय कौन कराता है। (काव्य-बिंब)

3. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

अज्ञेय की कविता का मूत्र स्वर स्पष्ट कीजिए।

4. 'रामदास' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राजेश जोशी की कविताओं में व्यक्त स्वप्न और यथार्थ का चित्रण कीजिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए । (15

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

30-05-2024

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3499 A

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : B.A. (H) – Hindi

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता। वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है। कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

P.T.O.

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई। यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी। ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी। यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है। वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया ? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया। इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है-यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा ?

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती-बिगड़ती रही थी।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- सांस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम!

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा (7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का तामा-बाना है । इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए । (15)

अथवा

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है । भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है ।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए ।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है । स्पष्ट कीजिए । (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए ।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3009 A

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : BA (H) Hindi – CBCS

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

P.T.O.

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुतः यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध हैं। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है; उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो; सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगो को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलतः वे इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है । परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है । कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी । लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती । कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है ।

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए ।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

70

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3480 A

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

Name of the Course : B.A. (H) –Hindi – CBCS

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "भारतमित्र संपादक! जीते रहो- दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर बैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी

P.T.O.

बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होना चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं। किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की-सी निकली जिसने ऊंचे आकाश में चढ़े चढ़े भूमि पर एक गेहूं का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने से पहले जाल में फंस गया।"

अथवा

"ग़लतीवश, मोहवश, दुर्भाग्यवश जब से हमने गलितांग को अपना अंग जानकर काट फेंकने से इंकार कर गले से लगाना शुरू किया है, तभी से विष सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। अब से पचास-साठ वर्ष पहले अखिल-भारतीय स्तर पर सहस्त्र-सहस्त्र ऐसे ब्रह्मराक्षस पैदा हुए थे जिन्होंने कुकर्मों के स्लो-पॉइजन द्वारा मारते-मारते सनातन धर्म को मार ही डाला! इस पूर्णता से वह सनातन धर्म तो अब पुनः जागने-जीने वाला जिसके सराना ब्राह्मण लोग थे। ब्राह्मण-कुल में मैं भी पैदा हुआ हूं। कोई पूछ सकता है कि सनातन धर्म या ब्राह्मण धर्म के इस विनाश पर मेरी क्या राय है।"

(ख) "समस्या यही हैं कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आप की कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर

रायसाहब 'पत्रं-पुष्पं-फलं' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया हैं अत: पुरस्कार के मामले में वह एकाएक कलकत्ता और बंबई के प्रकाशकों का मुकाबिला नहीं कर सकते, फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हो, लिखें। अविलंब किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता हैं। अवश्य लिखिए।"

अथवा

"इस विचार को अब तक भिन्न-भिन देशों में कितना क्रियात्मक रूप मिल चुका है यह प्रत्येक जिज्ञासु को ज्ञात होगा। पश्चिमीय तथा पूर्वीय जगत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है जिनमें पुरुषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांध कर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। उन देशों की महिलाएं राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के अधिकारों द्वारा अपनी शक्तियों का विकास कर, गृह तथा बाह्य संसार में पुरुषों की सहयोगिनी बनकर अपने देश और जाति के उत्कर्ष का कारण बन रही हैं, अपकर्ष का नहीं।" (8+7=15)

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'बैष्णव की फिसलन' निबंध की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' आत्मकथा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए। (15)

Dupli

अथवा

जीवनी के तत्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' (नए संघर्ष) की समीक्षा कीजिए।

5. 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खां पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

B.A(H)

8

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 654 **B**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10+10+10=30)

(क) कबीर इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूंछ ज पकड़े भेड़ की, उतरया चाहै पार।।
जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास।
सूवै सैं बल सेविया, यौं जग चल्या निरास।।

P.T.O.

अथवा

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात।।

फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।

अंग-अंग-छवि-झर में भयौ भौंर की नाव।।

(ख) गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर दावा नागजूह पर सिंहसिरताज को।

दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।।

भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरन समाज को।

पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लौं जहाँ पातसाहि तहाँ दावा सिवराज को।।

अथवा

वे जिन तकलीफों को जानकर

उनका वर्णन नहीं करते हैं

वही है कला उनकी

कम-से-कम कला है वह

और दुसरी जो है बहुत-सी कला है वह
कला बदल सकती है क्या समाज?
नहीं जहाँ बुत कला होगी, परिवर्तन नहीं होगा।

(ग) एक दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितनी होती
निशाकाल के चिर -अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकवी का
बंद हुआ क्रंदन फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवलों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है

अथवा

कितना दुःख वह शरीर जज़्ब कर सकता है?
वह शरीर जिसके भीतर खुद शरीर की टूटन हो
मन की कितनी कचोट कुण्ठा के अर्थ समझ
उनके द्वारा अमीर होता जा सकता है ?

2. किसी एक का सहित्यिक परिचय लिखिए : (10)

(क) कबीर

(ख) जयशंकर प्रसाद

3. भूषण ओज गुण के कवि कहलाते हैं। स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

बिहारी के काव्य में वर्णित श्रृंगार वर्णन को सोदाहरण लिखिए।

4. 'बादल को घिरते देखा है' कविता की मूल संवेदना लिखिए। (10)

अथवा

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' कविता का भाव पक्ष लिखिए।

5. निम्नलिखित किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (5+5+5=15)

(क) राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी

(ख) कृष्णकाव्य

(ग) छायावाद

(घ) संतकाव्य

(ङ) ब्रजभाषा

(क)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

B

Sr. No. of Question Paper : 655

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi : B

Name of the Course : B.A. (Program) / LOCF

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित किन्हीं 'तीन' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(10+10+10)

(क) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥

अथवा

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।

मोहि राम राउरि आन दशरथ सपथ सब साची कहौं।।

बरु तीर मारहुं लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारू उतारिहौं।।

(ख) सटपटाति-सी ससिमुखी मुख घूंघट-पटु ढांकि।

पावक-झर सी झमकि कै गई झरोखा झाँकि।।

अथवा

आंखि ही मेरी पै चेरी भई लखि फेरी फिरै न सुजान की घेरी।

रूप-छकी, तृित ही बिथकी, अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी।

प्रान लै साथ परी पर-हाथ बिकानि की बानि पै कानि बखेरी।

पायनि पारि लई घनआनंद चायनि बावरी प्रीति की बेरी।।

(ग) परिचय पूछ रहे हो मुझसे,

कैसे परिचय दूँ इसका !

वही जान सकता है इसको,

माता का दिल है जिसका।

अथवा

कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बंधा यौवन,

नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार-

सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

2. 'कबीर' के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

अथवा

'केवट प्रसंग' का सार लिखिए।

3. घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि हैं- प्रस्तुत कथन का विश्लेषण कीजिए। (10)

अथवा

बिहारी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

4. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का केंद्रीय भाव अभिव्यक्त कीजिए। (10)

अथवा

'बालिका का परिचय' कविता में अभिव्यक्त वात्सल्य भाव का वर्णन कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) ब्रजभाषा

(ii) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(iii) संत साहित्य की विशेषताएं

(iv) द्विवेदी युग की विशेषताएं

(v) प्रगतिवादी काव्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper: 656

Unique Paper Code : 62051204

Name of the Paper : Hindi - C

Name of the Course : B.A (Programme) Hindi CBCS

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

   इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. All questions are compulsory.

   सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (10 x 3= 30)

(क) पाहन पूजे हरि मिले तो मै पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली पीस खाय संसार।।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अपराधै ईस
इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस
तुम तो सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस
सूर हमारै नंद-नंदन बिन, और नहीं जगदीस।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होइ।।

अथवा

अति सूधो सनेह का मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं। तहाँ
साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं। घनआनंद
प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

(ग) संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना

पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को।
नर हो, न निराश करो मन को।।

अथवा

छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छीटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर!
सुंदर लगते थे, मावस के हंसमुख नभ-से!
चोटी के मोती-से, आंचल के बूटों से!
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियां टूटी!

2. कबीर सामाजिक चेतना के अग्रदूत हैं। इस कथन पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

सूरदास का जीवन परिचय लिखिए

3. 'बिहारी के दोहे गागर में सागर भरते हैं' इस कथन के आधार पर बिहारी के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। (10)

अथवा

घनानंद के दोहों का भावार्थ लिखिए।

4. मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवि है। स्पष्ट कीजिए (10)

अथवा

'आह, धारती कितना देती है' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

5. किन्ही तीन पर टिप्पणी लिखिए (5×3=15)

(क) हिंदी का भौगोलिक क्षेत्र

(ख) छायावाद

(ग) संतकाव्य

(घ) रीतिकाल की विशेषताएँ ।

(ड) प्रयोगवाद।

(1) 7

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3063 **A**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. भाषा और समाज के अंतर्संबंध को सविस्तार समझाइए। (15)

अथवा

समाजभाषा विज्ञान से क्या अभिप्राय है समाज भाषा विज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

2. भाषा और जातीयता के अंत:संबध को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

बहुभाषिकता से आप क्या समझते हैं? भारत में बहुभाषिकता के महत्व को समझाइए ।

3. शिक्षित एवं अशिक्षित वर्ग की भाषा में अन्तर बताते हुए समाज के विभिन्न वर्गों के भाषा व्यवहार पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

भाषा और संस्कृति के अंतः संबंध को रेखांकित कीजिए ।

4. भाषा सर्वेक्षण से आप क्या समझते हैं? भाषा सर्वेक्षण की प्रविधि पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

भाषा के नवीन प्रयोग का संबंध आधुनिकीकरण से है । इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिए : (15)

(क) भाषा का समाजशास्त्र

(ख) पिज़िन भाषा

(ग) भाषाई अस्मिता

(घ) भाषा नमूनों का विश्लेषण

12

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4096 A

Unique Paper Code : 62051404

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : B.A. (Prog.)

Semester : IV

Time : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) ऐसे-ऐसे सवाल पूछते कि आजकल लाहौर का क्या हाल है? अनारकली में अब पहले जितनी रौनक होती है या नहीं? सुना है, शहालमीगेट का बाजार पूरा नया बना है? कृष्णनगर में तो कोई खास तब्दीली नहीं आई? वहाँ का रिश्वतपुरा क्या वाकई रिश्वत के पैसे से बना है?.....कहते हैं, पाकिस्तान में अब बुर्का

P.T.O.

बिल्कुल उड़ गया है, यह ठीक है? इन सवालों में इतनी आत्मीयता झलकती थी कि लगता था, लाहौर एक शहर नहीं, हजारों लोगों का सगा-संबंधी है।

अथवा

कितने ही लोग जिन्हें कोई पूछता भी न था, हमारे ही बनाये बड़े आदमी बन गये और अब मोटरों पर निकलते हैं और हमें नीच समझते हैं। यह लोगों की तकदीर की खूबी है कि जिसकी जरा बढ़ती हुई और उसने हमसे आँखें फेरीं। हमारा बड़ा आदमी तो वही है, जो लँगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है, जो हमारी दशा को सुधारने के लिए अपनी जान हथेली पर लिये फिरता है। और हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं है। सच पूछों तो इन बड़े आदमियों ने ही हमारी मिट्टी खराब कर रखी है। इन्हें सरकार ने कोई अच्छी-सी जगह दे दी, बस उसका दम भरने लगे।

(ख) किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुंदर दिखाई पड़ता है, अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्म-रक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग दिखाई देती है उसके सौंदर्य को परपीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता।

अथवा

एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं।
टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायँ
और धोबी को ब्राह्मण कर दें।
टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें।
टके के वास्ते झूठ को सच करें।
टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान,
टके के वास्ते हिंदु से क्रिस्तान।

2. 'निबंध' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

नाटक के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (12)

3. 'मलबे का मलिक' कहानी विभाजन की त्रासदी को प्रस्तुत करती है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मैं हार गई' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

4. 'अशोक के फूल' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'उत्साह' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

5. 'भोलाराम का जीव' में लेखक क्या संदेश देना चाहता है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'चीड़ों पर चांदनी' का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) एकांकी का स्वरूप

(ख) जीवनी की विशेषताएं

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4097 A

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (Hindi-B)

Name of the Course : B.A. (Prog.) Functional Hindi

Semester : IV (CBCS)

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी गद्य की विकास-यात्रा पर लेख लिखिए। (12)

अथवा

नाटक के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'गुंडा' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

3. 'मेले का ऊँट' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भोलाराम का जीव' पाठ का सार लिखिए।

4. 'अंधेर नगरी' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'बिबिया' की समीक्षा कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घर वाले कोई बात उनकी

इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो वे रोने लगती थीं। उनका रोना - सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़ - फाड़कर रोती थीं।

अथवा

आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ा कर बंद कर देतें हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया ?।

(ख) कर्म मार्ग में फंसकर लोग अनेक देवी देवों को पूजते हैं, किंतु बुद्धि का यह प्रकृत धर्म है कि यह ज्यों - ज्यों समुज्जवल होती है अपने विषय मात्रा को उज्ज्वल करती जाती है। थोड़ी बुद्धि बढ़ने से ही यह विचार चित्त में उत्पन्न होता है कि इतने देवी देव इस अनंत सृष्टि के नियामक नहीं हो सकते, इनका कर्ता स्वतंत्र कोई विशेष शक्तिसंपन्न ईश्वर है।

अथवा

हार-जीत की वस्तुएँ भी विचित्र होती थीं। कपड़ा, जूता, रुपया-पैसा, बर्तन आदि में से जो हाथ में आया, वही दाँव पर रख दिया जाता था। कोई किसी की घरवाली की हँसुली जीत लेता और कोई किसी की पतोहू के झुमके। कोई अपनी बहन की पहुँची हार जाता था और कोई नातिन के कड़े। सारांश यह कि जुए के पहले चोरी-डकैती की आवश्यकता भी पड़ जाती थी।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) रेखाचित्र

(ख) गद्य के विकास में सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की भूमिका

(ग) कहानी और उपन्यास का अंतर

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3203 A

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : Hindi Ki Bhashik Vividhtaein

Name of the Course : Hindi

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी सिनेमा और मीडिया में व्याप्त क्षेत्रीय हिंदी रूपों के प्रयोग पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की विविधता पर प्रकाश डालिए।

2. पाठ्यक्रम में दिए गए पदों के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताएँ बताइए। (15)

P.T.O.

अथवा

अमीर खुसरो की पहेलियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बनारसी दास की आत्मकथा 'अर्ध कथानक' की विशेषताएं और महत्व लिखिए। (15)

अथवा

वर्तमान में गालिब की शायरी की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' के कथानक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'पंचलैट' कहानी की संवेदना लिखिए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या। (8)

रहे आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।

जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते।

हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या।

खलक़ सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरुनाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या।
न पल बिछड़े पिया हमसे, न हम बिछड़े पियारे से।
उन्हीं से नेह लगी है; हमन को बेकरारी क्या।
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ।।

अथवा

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो
हम-सुखन कोई न हो और हम जबा कोई न हो
बे-दरो-दीवार-सा इक घर बनाया चाहिए
कोई हमसाया न हो और पासबाँ कोई न हो
पड़िए गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइए तो नौहा-ख्वां कोई न हो।

(ख) रजनी समै मधुर मुख भास। बनिता कहै बानारसी पास। (7)
कंत तुम्हारी कहा बिचार। इहां रहौ कै करो बिहार ।।
बानारसी कहै तिय पांहि। हम तू साथ जौनपुर जाहि ।।
बनिता कहै सुनंहु पिय बात। उहां महा बिपदा उतपात ।।

अथवा

गुलरी काकी की बेटी गुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले ? वह जनती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। मुनरी की माँ ने पंचायत में फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर 'सलम-सलम' वाला सलीमा का गीत गाता है - "हम तुमसे मोहोब्बत करके सलम!" पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने से हुक्का पानी बंद। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए मुनरी उसका नाम कैसे ले ? और उधर जाति का पानी उत्तर रहा है।